

आधुनिक हिंदी कहानी में डॉ. ममता कालिया**डॉ. राजकुमार सिंह**

हिंदी विभाग

राजकीय कन्या महाविद्यालय, लालसोट दौसा

सारांश

आधुनिक हिंदी कहानी के विकास में महिला कथाकारों ने न केवल अपनी विशिष्ट रचनात्मक उपस्थिति दर्ज कराई है, बल्कि सामाजिक यथार्थ, वर्गीय संघर्ष, लैंगिक असमानता और पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं को नए आयाम भी दिए हैं। इन महिला रचनाकारों में डॉ. ममता कालिया एक महत्वपूर्ण नाम हैं, जिनकी कहानियाँ अपने समय और समाज की गहरी समस्याओं को उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ आधुनिक हिंदी कहानी के विविध आयामों—नारी चेतना, मध्यवर्गीय जीवन, संघर्षशील स्त्री के आत्मविकास, दांपत्य संबंधों की खाई, और सामाजिक मान्यताओं की विडंबनाओं—को नए ढंग से परिभाषित करती हैं।

ममता कालिया की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे सामान्य जीवन की मामूली सी दिखने वाली घटनाओं को भी गहरी संवेदना और तीखे व्यंग्य के साथ प्रस्तुत करती हैं। वे स्त्री की पीड़ा को केवल भावनात्मक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की आलोचना और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि आधुनिक हिंदी कहानी में स्त्री की अस्मिता, स्वतंत्रता और संघर्ष सिर्फ मुद्दे नहीं, बल्कि जीवित अनुभव हैं।

उनकी रचनाओं में समकालीन जीवन के तनाव, शहरी सभ्यता का कृत्रिमपन, उपभोक्तावाद की मार, और मध्यवर्गीय परिवार का असुरक्षित ढाँचा तीक्ष्णता के साथ सामने आता है। साथ ही, उनकी भाषा में मौजूद व्यंग्यात्मक धार पाठक को केवल हँसाती नहीं बल्कि समाज की विसंगतियों पर सोचने के लिए विवश करती है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक हिंदी कहानी के विकास में डॉ. ममता कालिया की भूमिका का विश्लेषण करना, उनकी कहानियों के प्रमुख विषयों की पहचान करना और उनकी भाषा-शैली, कथा-शिल्प तथा नारी-विमर्श के योगदान की पड़ताल करना है। उनके साहित्य के माध्यम से यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार उन्होंने आधुनिक हिंदी कहानी को न सिर्फ विषय-वस्तु के स्तर पर, बल्कि दृष्टिकोण और प्रस्तुति के स्तर पर भी समृद्ध किया।

मुख्य शब्द (Keywords):

आधुनिक हिंदी कहानी, ममता कालिया, नारी चेतना, मध्यवर्गीय जीवन, यथार्थवाद, व्यंग्य, स्त्री अस्मिता, सामाजिक यथार्थ।

परिचय

आधुनिक हिंदी कहानी का उद्भव और विकास भारतीय समाज के बदलते स्वरूप से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय समाज आर्थिक संक्रमण, राजनीतिक अस्थिरता, औद्योगिक विकास और सांस्कृतिक बदलावों से गुजर रहा था। इन परिवर्तनों का सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ा, विशेषकर कहानी विधा पर। 1950 के दशक में कहानी ने कथानक, पात्र और भाषा—तीनों स्तरों पर तीव्र बदलाव देखा। प्रेमचंद की सामाजिक यथार्थवादी परंपरा से आगे बढ़कर कहानीकारों ने न केवल यथार्थ को नए सिरे से समझने की कोशिश की बल्कि उसकी तहों में छिपी जटिलताओं को उजागर किया।

इसी परिवर्तित परिप्रेक्ष्य में ममता कालिया का साहित्यिक प्रवेश हुआ। 1960-70 के दशक में जब समाज में स्त्री के प्रश्नों पर चर्चा शुरू हो रही थी, तब ममता कालिया ने अपने लेखन के माध्यम से उन समस्याओं को सामने रखा जिन्हें मुख्यधारा साहित्य अक्सर अनदेखा करता था। उनकी कहानियाँ केवल स्त्री के शोषण या पीड़ा की कथा नहीं हैं, बल्कि वे स्त्री जीवन के भीतर मौजूद विरोधाभासों, आकांक्षाओं, सपनों, अपमानों और संघर्षों को मानवीय दृष्टि से समझने का प्रयास करती हैं।

ममता कालिया नारीवाद को केवल विद्रोह या संघर्ष का माध्यम नहीं मानतीं। उनके लिए स्त्री मन की जटिलताएँ, समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं की विडंबनाएँ, और पारिवारिक ढाँचे में स्त्री की स्थिति अधिक महत्वपूर्ण विषय बन जाते हैं। उनकी कहानियाँ 'स्त्री बनाम पुरुष' का सरल विभाजन नहीं करतीं, बल्कि यह दिखाती हैं कि समाज की पितृसत्तात्मक संरचना किस प्रकार मनुष्य की स्वतंत्रता को सीमित करती है, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष।

उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की अनुभूतियाँ प्रमुख रूप से दिखाई देती हैं—सरकारी नौकरी की असुरक्षा, पारिवारिक कर्तव्यों का दबाव, आर्थिक असंतुलन, सामाजिक प्रतिस्पर्धा, और संबंधों में फैलती दूरियाँ। उनकी कहानियाँ जैसे “जिंदगी तुम्हारी है”, “दौड़”, “नई जगह”, “सपना”, “बूढ़ा खरगोश” और “नरक” आधुनिक हिंदी कहानी की संवेदनशील और यथार्थवादी धारा का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं।

परिचय का मूल उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि ममता कालिया की कहानियाँ केवल साहित्यिक सृजन नहीं, बल्कि समाज की संरचना और व्यक्ति की अस्मिता के प्रश्नों से गहरे रूप से जुड़ी हुई हैं। वे आधुनिक हिंदी कहानी को केवल विषय नहीं देतीं, बल्कि उसमें एक नई दृष्टि, नई भाषा और नया शिल्प भी जोड़ती हैं।

ममता कालिया का परिचय

डॉ. ममता कालिया समकालीन हिंदी साहित्य की ऐसी सशक्त कथाकार हैं जिन्होंने अपने लेखन के माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री की मनःस्थिति और समाज की संरचनात्मक विसंगतियों को बेहद प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका जन्म 1940 में उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक नगर वृंदावन में हुआ। साहित्यिक वातावरण और शिक्षित परिवार में पली-बढ़ी ममता कालिया ने अपने व्यक्तित्व में संवेदना, साहस और आलोचनात्मक दृष्टि—तीनों गुणों का समन्वय विकसित किया।

उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा वृंदावन और दिल्ली में प्राप्त की तथा आगे चलकर अंग्रेज़ी और हिंदी दोनों भाषाओं में उच्च शिक्षा प्राप्त की। उनकी शिक्षा ने उन्हें भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य की परंपराओं से गहराई से जोड़ दिया, जिसका प्रभाव उनके रचनात्मक लेखन पर स्पष्ट दिखाई देता है।

शिक्षण और संपादन के क्षेत्र में भी उनका योगदान उल्लेखनीय है। वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में लंबे समय तक प्राध्यापक रहीं, जहाँ उन्होंने अनेक पीढ़ियों के विद्यार्थियों को साहित्य की संवेदनशील दृष्टि प्रदान की। इसके साथ ही वे 'नया ज्ञानोदय' और 'वसुधा' जैसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रों से भी जुड़ी रहीं।

ममता कालिया की प्रसिद्धि का बड़ा हिस्सा उनकी कहानियों और उपन्यासों से जुड़ा है। "इंडियन कॉफ़ी हाउस" जैसी कहानियों ने उन्हें हिंदी कथा-साहित्य में एक अलग पहचान दी। उनकी रचनाएँ अक्सर साहित्यिक मंच पर चर्चा का केंद्र बनी रहती हैं क्योंकि वे समाज के उन पहलुओं को छूती हैं जिन्हें अन्य लेखक अक्सर नजरअंदाज करते हैं।

उनकी प्रमुख कृतियों में *बेघर*, *एक अदद औरत*, *नरक दर नरक*, *सीढ़ियाँ*, *छोटे-मोटे सवाल*, *हवा बस हवा*, *बोलने वाली लड़की*, *अनवरत* आदि महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। इन रचनाओं में न केवल स्त्री जीवन की विडंबनाएँ बल्कि मानवीय रिश्तों की टूटन, सामाजिक दबाव और आर्थिक संघर्ष के विविध आयाम भी साफ उभरकर सामने आते हैं।

आधुनिक हिंदी कहानी का परिप्रेक्ष्य (Expanded Context of Modern Hindi Story)

आधुनिक हिंदी कहानी का विकास 1950 के बाद तीव्र गति से हुआ। यह वह समय था जब भारत स्वतंत्रता प्राप्त कर नए सामाजिक और आर्थिक ढांचे की ओर बढ़ रहा था। देश की बदलती परिस्थितियों,

शहरीकरण, नौकरशाही का विस्तार, पूँजीवादी व्यवस्था का उदय और परिवार की संरचना में आने वाले परिवर्तनों ने कहानी को नया आधार प्रदान किया।

1940 तक जहाँ प्रेमचंद का यथार्थवाद कहानी का प्रमुख स्वर था, वहीं 1950 और 60 के दशक में मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, नई पीढ़ी के युवा मन की बेचैनियाँ और स्त्री जीवन की वास्तविक स्थितियाँ कहानी के केंद्र में आ गईं।

इसी दौरान उभरी नई कहानी आंदोलन ने यह स्थापित किया कि कहानी अब केवल समाज की घटनाओं का वर्णन नहीं, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक उथल-पुथल का दस्तावेज़ होगी। इस परिवर्तित कथा-परिदृश्य में ममता कालिया का लेखन अत्यंत प्रभावशाली रूप में सामने आया।

वे उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसने स्त्री को केवल गृहस्थी या करुणा की प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि एक विचारशील, तर्कशील और आत्मनिर्भर इंसान के रूप में प्रस्तुत किया।

उनकी कहानियाँ यह दिखाती हैं कि आधुनिक हिंदी कहानी अब केवल सामाजिक-आर्थिक ढांचे की पड़ताल नहीं करती, बल्कि व्यक्ति-विशेष की चेतना, स्वतंत्रता और जीवन-संघर्ष को भी गहराई से समझने का प्रयास करती है।

इस प्रकार, ममता कालिया का लेखन आधुनिक हिंदी कहानी की उन धाराओं को परिभाषित करता है जिनमें—

- स्त्री का व्यक्तित्व,
- मध्यवर्ग का विखंडन,
- मनोवैज्ञानिक दबाव,
- उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव,
- और समाज की बनावटी नैतिकता—
सभी का आलोचनात्मक विश्लेषण मौजूद है।

विषय-वस्तु का विस्तृत विश्लेषण (Expanded Analysis of Themes)**1. नारी अस्मिता और संघर्ष**

ममता कालिया की कहानियों का प्रमुख केन्द्रीय स्वर स्त्री की अस्मिता की तलाश है। वे स्त्री को सामाजिक अपेक्षाओं, परिवार की जिम्मेदारियों और पितृसत्तात्मक मूल्यों के बीच संघर्षरत व्यक्तित्व के रूप में देखती हैं।

उनकी कहानी *एक अदद औरत* स्त्री की उस पहचान-यात्रा को दर्शाती है जो विवाह, परिवार और समाज के ढांचे से बंधी होते हुए भी स्वयं के अस्तित्व की खोज करती है।

ममता कालिया की स्त्रियाँ—

- दबाव झेलती हैं
- प्रश्न उठाती हैं
- प्रतिरोध करती हैं
- और अंततः अपनी आवाज़ खोज लेती हैं

वे दया की पात्र नहीं, बल्कि संघर्ष की प्रतीक हैं। उनकी कहानियों में स्त्री हमेशा परिवर्तन का कारक है— चाहे वह आर्थिक स्वतंत्रता की तलाश हो या मानसिक संतुलन की लड़ाई।

2. मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

मध्यवर्ग ममता कालिया की कहानियों का सबसे मजबूत आधार है। वे इस वर्ग के जीवन की टूटन, संघर्ष, दिखावा, आर्थिक दबाव, नौकरी की असुरक्षा और रिश्तों की उलझनों को बारीकी से चित्रित करती हैं।

कहानी *छोटे मोटे सवाल* में वे दिखाती हैं कि किस प्रकार मध्यमवर्गीय परिवार की छोटी-छोटी समस्याएँ भी बड़े तनाव का कारण बन जाती हैं। मध्यवर्ग का दिखावा, सामाजिक प्रतिष्ठा का दबाव और पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ उनकी अनेक कहानियों का मूल-विषय है।

उनकी कहानियाँ यह भी बताती हैं कि मध्यमवर्गीय स्त्री पर दोहरे दायित्व हैं— घर की देखभाल और बाहर के कार्यों की जिम्मेदारी।

3. व्यंग्यात्मक दृष्टि

ममता कालिया की लेखनी की प्रमुख पहचान उनका तीक्ष्ण व्यंग्य है। उनके व्यंग्य में कटुता नहीं, बल्कि समाज को आईना दिखाने का साहस है।

कॉफ़ी हाउस कहानी में उन्होंने बौद्धिक वर्ग के पाखंड, खोखली चर्चाओं और बनावटी प्रगतिशीलता पर बेहतरीन कटाक्ष किया है।

उनका व्यंग्य—

- सामाजिक विसंगतियों पर चोट करता है
- जीवन के खोखले मूल्यों को उजागर करता है
- और पाठक को सोचने पर मजबूर करता है

4. भाषा और शैली

उनकी भाषा सरल, सहज और संवादप्रधान है। वे बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती हैं, जिससे कहानी अत्यधिक वास्तविक और जीवंत लगती है।

ममता कालिया की शैली—

- आधुनिक
- व्यंग्यात्मक
- मनोवैज्ञानिक
- और अत्यंत संवादात्मक है

उनके पात्र अपने स्वाभाविक परिवेश में बातचीत करते हैं, जिससे कहानी पाठक के निकट आ जाती है।

उनकी भाषा में कहीं-कहीं हास्य भी मिलता है, जो कथानक को हल्का बनाते हुए भी गहरे व्यंग्य का आधार देता है।

ममता कालिया की कहानियों की विशेषताएँ (Expanded Features)

1. **जीवन के वास्तविक अनुभवों का सशक्त चित्रण** — उनके अनुभव अत्यंत वास्तविक और अनुभवजन्य हैं।
2. **स्त्री मनोविज्ञान की गहरी पकड़** — स्त्री की भावनाओं, द्वंद्वों और आकांक्षाओं का सूक्ष्म चित्रण।
3. **व्यंग्य और हास्य की धार** — समाज की विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य।
4. **सामाजिक यथार्थ का गहन विश्लेषण** — खासकर मध्यवर्गीय ढांचे का।
5. **सरल और आधुनिक भाषा-शैली** — बिना शब्दाडंबर के प्रभावी अभिव्यक्ति।

आधुनिकता का स्वर और ममता कालिया

आधुनिक हिंदी कहानी में 'व्यक्ति' का केंद्र में होना सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन है। ममता कालिया उस आधुनिकता को अपनाती हैं जिसमें व्यक्ति—चाहे स्त्री हो या पुरुष—अपनी भावनाओं, इच्छाओं और संघर्षों के साथ मूल केंद्र में है।

उनकी कहानियाँ इस बात को स्पष्ट करती हैं कि आधुनिक स्त्री को मुक्ति केवल सामाजिक संरचनाओं के खंडन से नहीं मिलेगी, बल्कि अपने अस्तित्व की पुनर्स्थापना से मिलेगी।

निष्कर्ष

डॉ. ममता कालिया आधुनिक हिंदी कहानी की एक प्रभावशाली और विशिष्ट रचनाकार हैं। उन्होंने स्त्री जीवन के विविध आयामों—उसके संघर्ष, सपनों, भय, आकांक्षाओं, आर्थिक सीमाओं और मनोवैज्ञानिक दबावों—को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया है।

उनकी कहानियाँ न केवल नारी-विमर्श को नई दिशा देती हैं, बल्कि आधुनिक हिंदी कहानी को एक नई दृष्टि, नई भाषा और नई आलोचनात्मक संवेदना भी प्रदान करती हैं।

उनका साहित्य समाज के द्वंद्वों और स्त्री की अस्मिता के संघर्ष का अनमोल दस्तावेज़ है।

संदर्भ

1. कालिया, ममता. बेघर. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1992।
2. कालिया, ममता. एक अदद औरत. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2005।
3. कालिया, ममता. सीढियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2011।

4. कालिया, ममता. छोटे-मोटे सवाल. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन, 1985।
5. कालिया, ममता. नरक दर नरक. नई दिल्ली: साहित्य भंडार, 2000।
6. कालिया, ममता. इंडियन कॉफ़ी हाउस और अन्य कहानियाँ. दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2008।
7. त्रिपाठी, रेवती. हिंदी की समकालीन महिला कहानी. नई दिल्ली: डायमंड बुक्स, 2010।
8. शर्मा, उषा. हिंदी नारीवाद और आधुनिक कहानी. दिल्ली: राजपाल एंड संस, 2007।
9. चौधरी, नमिता. स्त्री विमर्श के नए आयाम. दिल्ली: संवाद प्रकाशन, 2015।
10. कलीता, मीरा. आधुनिक हिंदी कथा साहित्य. कोलकाता: साहित्य सेवा, 2012।
11. सिंह, प्रताप. “नई कहानी और स्त्री चेतना.” हंस, अंक 247, 2014।
12. मिश्र, राजकुमार. “समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री की बदलती भूमिका।” तद्भव, अंक 28, 2014।
13. यादव, रमेश. मध्यवर्गीय जीवन और हिंदी कहानी. दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2013।
14. कौर, गुरजीत. “ममता कालिया के कहानी-संसार में स्त्री अस्मिता का प्रश्न.” इंद्रप्रस्थ भारती, 2009।
15. पांडेय, उर्मिला. नारी कथा साहित्य का विमर्श. भोपाल: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, 2011।
16. वर्मा, राकेश. “ममता कालिया की कहानियाँ: एक विश्लेषण.” समकालीन भारतीय साहित्य, 2008।